दिनांक :- 28-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- तेरह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना

साम्यवादियों की विजय :- नानकिंग से राष्ट्रीयवादी सरकार के प्रधानमंत्री सुनफो (Sun-fo) ने साम्यवादियों के साथ समझौता वार्ता करने का प्रयास किया। साम्यवादी अपने शर्तों में किसी प्रकार का परिवर्तन करना नहीं चाहते थे अतएव 19 अप्रैल 1949 को समझौता-वार्ता अन्तिम रूप में विफल हो गई तथा कुओमिनतांग और साम्यवादियों के बीच खुला संघर्ष प्रारंभ हो गया।

अरी चीन में राष्ट्रीयवादी सेनाएं पराजित हुई तथा पर्याप्त सहायता न मिलने के कारण उन्हें पिकिंग साम्यवादियों को सौंप देना पड़ा देखते ही देखते हांको और कैंटन पर भी उनकी विजय हो गई। 17 सितम्बर १९४९ को ब्रिटेन, फ्रांस तथा अमरीका के परराष्ट्र विभाग ने यह स्वीकार किया कि चीन में कुओमिनतांग दल की सत्ता समाप्त हो चुकी है इसी समय पश्चिमी चीन में अनेक प्रांतपतियों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। १९४९ के समस्त सेनाध्यक्षों अन्त में साम्यवादियों ने मंगोलिया के सेनाध्यक्षों को पराजित किया। मार्च 1950 में उन्होंने समस्त सेनाध्यक्षों को पराजित कर केन्द्रीय सत्ता की स्थापना की राष्ट्रवादी सेना की अवशेष टुकड़ी के साथ च्यांग काई शेक फारमोसा चला गया। मार्च 1950 में उसे राष्ट्रवादी चीन के राष्ट्रपति के पद का कार्यभार पुनः संभाल

लियाओ इस प्रकार सम्पूर्ण चीन साम्यवादी दल कुंग चांग तांग के अधीन आ गया।

साम्यवादियों की सफलता के कारण :- गृहयुद्ध में साम्यवादियों की सफलता कोई एक आश्चर्यजनक घटना नहीं थी। इसकी सफलता इतिहास के तर्क में निहित थी। कोई भी दल सही अर्थ में लोकतांत्रिक या लोकप्रिय होने का दावा कर सकता है जब वह आम लोगों के दुःख दर्द को समझते हुए उनके सहयोग से आगे बढ़ता है। चीन में साम्यवादी दल की नींव इसी आधारभूत सिद्धांत पर पड़ी थी। यह बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के सिद्धांत को लेकर अग्रसर हुआ और अन्तिम समय तक इसने इसका परिपालन किया। अतः इसकी विजय निश्चित थी। इसके निम्नलिखित कारण उल्लेख नीय है।

① कुओमिनतांग सरकार के दोष :- जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए डा० सनयात सेन ने कुओमिनतांग दल का संगठन

किया था उन्हें च्यांग काई शेक ने भुला दिया। निस्सन्देह इसके राष्ट्रीयता, प्रजातंत्र और आजीविका सिद्धांत बड़े लोकप्रिय थे, किंतु उनका सही ढंग से परिपालन नहीं किया गया। 1925 में डॉ० सेन के निधन के पश्चात् दल का नेतृत्व च्यांग काई शेक करने लगा। उसने अपने शासन काल का प्रायः समस्त भाग अपने विरोधियों के विनाश करने में लगाया। शत्रुओं के साथ सदैव युद्ध करते रहने से शासन में शिथिलता भ्रष्टाचार और अव्यवस्था बनी रही। प्रांतपति विद्रोह करते रहे। अराजकता और अशान्ति बनी रही जिससे विघटनात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला। अतः कुओमिनतांग सरकार आम जनता और बुद्धिजीवियों के सहयोग से वंचित हो गई। ज्ञात है कि चीन में राष्ट्रीयता का प्रचार करने में तथा कुओमिनतांग दल की लोकप्रियता बढ़ाने में छात्रों और बुद्धिजीवियों ने बड़ा

योगदान दिया था लेकिन च्यांग उनके लिए कुछ नहीं किया। उन्हें साम्यवादियों के दमन के लिए सिलसिले में उसने हजारों छात्रों को गिरफ्तार किया और उन्हें प्राणदंड दिया। ऐसी स्थिति में साम्यवादियों की विजय निश्चित हो गई।

② कुओमिनतांग की फासिस्तवादी प्रवृत्ति:- च्यांग काई शेक के नेतृत्व में कुओमिनतांग दल की लोकतांत्रिक आत्मा पर फासिस्तवादी मुखौटा लगा गया। इसने आम लोगों को छोड़ दिया और पूंजीपतियों का दामन पकड़ लिया। चीन में साम्यवादियों की प्रभाव-वृद्धि के साथ-साथ कुओमिनतांग की फासिस्तवादी प्रवृत्ति अत्यधिक मुखर होती गई। यह प्रतिक्रियावादी और अधिनायकवादी होती गई। च्यांग काई शेक मुसोलिनी और हिटलर के फासिस्त सिद्धांतों तथा कार्यक्रमों का कट्टर समर्थक बन गया। उसने तो कुओमिनतांग दल को उसी में रंग दिया। नीली कुर्ती (Bule shirts) स्वयंसेवक सेना का

Scanned with CamScanner

का निर्माण इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। इसके द्वारा वह साम्यवादियों को खदेड़-खदेड़कर मारने लगा, जैसे वे हिंस्र पशु हों और वह आखेट का आनन्द ले रहा हो। केवल इतना ही नहीं, च्यांग ने मुसोलिनी की जीवनी का चीनी आखेट का आनन्द ले रहा हो। केवल इतना ही नहीं। आखेट का आनन्द ले रहा हो। अनुवाद कराकर पदाधिकारियों में बाँटा। अपने वायु सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए इटली के विशेषज्ञों को नियुक्त किया और जर्मन सलाहकारों को अपनी सरकार के कई विभागों में रखवा। इनके प्रभाव में आकर उसने फासिस्ट ढंग के गुप्त सैनिक और राजनीतिक दल संगठित किए। कुओमिनतांग में फासिस्ट विचारधारा आ जाने से इसका लोकतांत्रिक स्वरूप समाप्त हो गया। जनता इसे भय की दृष्टि से देखने लगी और साम्यवादियों की ओर झुकने लगी।

भ्रष्टाचार :- कुओमिनतांग सरकार अपने भ्रष्टाचार के लिए कुख्यात थी। बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ भी शुभान अल्लाह थे। आदमकद भ्रष्टाचार जिन्दगी का एक वसूल बन गया था। छोटे से लेकर बड़े पदाधिकारी तक ऐंठने से बाज नहीं आते थे। इससे प्रशासन मे भ्रष्टाचार और अयोग्यता को बढ़ावा मिला! नानकिंग की सरकार के समय से लेकर चुंगकिंग की सरकार के समय तक कुओमिनतांग के सदस्य धन कमाने तथा राजनीतिक दृष्टिकोण से अपनी स्थिति को संपन्न बनाने मे लगे। यहाँ तक कि राज्य की आमदनी से वे अपने परिवार तक की खर्च चलाते थे। अतः ऐसी भ्रष्ट सरकार पर लोगो का विश्वाश नही रह गया।

④ चार परिवारो का एकाधिकार :- च्यांग काई शेक ने साम्य वादियो के दमन हेतु पूंजीपतियो से गठबंधन कर लिया। इस समय चीन में चार परिवार के पूंजीपति थे

Scanned with CamScanner